*शिक्षा, निर्णय और जन-हित – बैंकिंग से सबक**

श्री स्वामीनाथन जे.

इस अवसर पर मद्रास स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के अध्यक्ष डॉ. सी. रंगराजन, मद्रास स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के निदेशक डॉ. एन. आर. भानुमूर्ति, सदर्न इंडिया चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री वी. एन. शिवा शंकर, स्वर्गीय श्री जी. रामचंद्रन के परिवार के सदस्य, उद्योग, शिक्षा और बैंकों के विशिष्ट अतिथि, सम्मानित संकाय सदस्य, कर्मचारी और प्रिय छात्रों, देवियों और सज्जनों। आप सभी को सुप्रभात।

जी. रामचंद्रन स्मृति व्याख्यान देना मेरे लिए सम्मान की बात है। मैं विशेषाधिकार शब्द का इस्तेमाल सोच-समझकर कर रहा हूँ क्योंकि यह मौका तीन अहम मूल्यों को एक साथ लाता है: एक प्रतिष्ठित जन-सेवक की स्मृति, मद्रास स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स का बौद्धिक माहौल, और सदर्न इंडिया चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री की लंबी संस्थागत विरासत।

श्री जी. रामचंद्रन उस पीढ़ी से थे जिन्होंने आज़ादी के बाद के दशकों में भारत के आर्थिक और वित्तीय संस्थानों को आकार देने में मदद की। मद्रास विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में प्रथम श्रेणी में प्रथम और सिविल सेवाओं के लिए अखिल भारतीय परीक्षा में अव्वल रहने के बाद, उन्होंने तमिलनाडु में बेहतरीन काम किया, वहाँ के सबसे कम उम्र के वित्त सचिव बने, बाद में उन्हें प्रधानमंत्री सचिवालय के लिए चुना गया, और आखिरकार वे भारत सरकार के वित्त सचिव बने। वे बैंकों के राष्ट्रीयकरण और गरीबी उन्मूलन जैसे बड़े आर्थिक नीतिगत उपायों से निकटता से जुड़े हुए थे, और बाद में एशियाई विकास बैंक के कार्यकारी निदेशक के रूप में सेवानिवृत्त हुए। उनका करियर हमें याद दिलाता है कि अर्थशास्त्र और सार्वजनिक नीति का असली मतलब लोगों, संस्थानों और व्यापक अर्थव्यवस्था पर उनके असर से ही तय होता है।

मैं डॉ. सी. रंगराजन की मौजूदगी का भी अत्यंत सम्मान और प्रशंसा के साथ ज़िक्र करना चाहता हूँ। भारतीय आर्थिक सोच, मौद्रिक नीति, वित्तीय क्षेत्र में सुधार और संस्था-निर्माण में उनके योगदान का हमारे आर्थिक इतिहास में एक विशिष्ट स्थान है। रिज़र्व बैंक में उनके लंबे कार्यकाल के दौरान उनकी विद्वता, सही निर्णय लेने की क्षमता और संस्थागत प्रतिबद्धता की चर्चा आज भी होती है। आज उनकी मौजूदगी में बोलना मेरे लिए सम्मान की बात है, और इस मौके की गरिमा बढ़ाने के लिए हम उनके आभारी हैं।

मैं आज प्रख्यात अर्थशास्त्रियों और अर्थशास्त्र के छात्रों की उपस्थिति में बोल रहा हूं। मैं एक पेशेवर अर्थशास्त्री के रूप में नहीं, बल्कि एक कैरियर बैंकर और बैंकिंग पर्यवेक्षक के रूप में यह कहता हूं। इसलिए मेरा दृष्टिकोण एक अभ्यासी का है। मैं आर्थिक सिद्धांत का बहुत सम्मान करता हूँ। जब सिद्धांत वास्तविकता से मिलता है तो जो होता है, उसके लिए मेरा सम्मान और भी ज़्यादा है।

आज मैं जिस विषय पर बात करना चाहता हूँ, वह है शिक्षा, निर्णय और पर्यवेक्षण अर्थात मेरे बैंकिंग करियर से मिली सीख है। मेरा मुख्य विषय यह है कि बैंकिंग को केवल संख्याओं, मॉडल या विनियमों के माध्यम से नहीं समझा जा सकता है, हालांकि तीनों महत्वपूर्ण हैं। इसे अनुभव, संस्थागत व्यवहार और सेवा के लिए वित्त है - इस सार्वजनिक उद्देश्य के माध्यम से भी समझा जाना चाहिए।

इस लिहाज़ से, बैंकिंग में मेरे कार्यकाल ने मुझे तीन तरह की शिक्षा दी है: कक्षा की शिक्षा, बैंकिंग काउंटर की शिक्षा, और पर्यवेक्षण की शिक्षा। हर एक का अपना अलग नज़रिया है, और इन तीनों ने मिलकर मुझे बैंकिंग को ज़्यादा बेहतर ढंग से समझने में मदद की है। मैं इसी अनुभव को विशेष रूप से, यहाँ मौजूद छात्रों के साथ साझा करना चाहता हूँ।

* 30 अप्रैल, 2026 को मद्रास स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स, चेन्नई में भारतीय रिज़र्व बैंक के उप गवर्नर श्री स्वामीनाथन जे. द्वारा 12वां जी. रामचंद्रन स्मारक व्याख्यान दिया गया।

कक्षा

मैं कक्षा से शुरू करता हूं। अर्थशास्त्र से मेरा पहला परिचय स्कूल और कॉलेज में परीक्षा के पेपर के माध्यम से हुआ। इसके विषय कई मायनों में हमेशा प्रासंगिक थे जैसे मांग और आपूर्ति, धन और बैंकिंग, सार्वजनिक वित्त, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, राष्ट्रीय आय और व्यवसाय चक्र। बहुत से छात्रों की तरह, मैं भी इन्हें इतना समझता था कि परीक्षा दे सकूं। लेकिन मुझे नहीं लगता कि उस समय मुझे पूरी तरह से अंदाज़ा था कि आगे चलकर ये विषय बैंकिंग और वित्त के बारे में मेरी समझ को कितनी गहराई से प्रभावित करेंगे।

जब मैंने बैंकिंग के क्षेत्र में कदम रखा, तब इनमें से कई बातें असल ज़िंदगी से जुड़ीं। मांग और आपूर्ति अब सिर्फ़ पाठ्यपुस्तक में बने ग्राफ़ नहीं रह गए थे। उन्हें ऋण की मांग, धन के मूल्य और उधारकर्ताओं के व्यवहार में देखा जा सकता था। धन और बैंकिंग, जो कभी पाठ्यक्रम का एक विषय हुआ करता था, अब वह दुनिया बन गया जिसमें मैंने रोज़ काम किया।

इसीलिए, पीछे मुड़कर देखने पर मैं कहता हूं कि अर्थशास्त्र की अच्छी शिक्षा एक बहुत ताकतवर चीज़ है। यह आपको ऐसे सवाल पूछना सिखाती है जो देखने में तो सरल होते हैं, लेकिन उनके नतीजे बहुत गहरे होते हैं। प्रोत्साहन क्या हैं? लागत कौन उठाता है? लाभ किसे मिलता है? अगर कोई नियम बदल जाए तो क्या होगा? अनपेक्षित परिणाम क्या हो सकते हैं? किस चीज़ की तुलना में?

बैंकिंग का ही उदाहरण लें। बैंक सिर्फ़ एक इमारत, तुलन पत्र या आपके फ़ोन पर मौजूद कोई ऐप नहीं है। बैंक वादों का एक समूह है। यह जमाकर्ताओं से वादा करता है कि उनका पैसा सुरक्षित रहेगा और ज़रूरत पड़ने पर मिल जाएगा। यह उधारकर्ताओं से वादा करता है कि उन्हें उचित शर्तों पर ऋण मिलेगा। यह शेयरधारकों से वादा करता है कि उनकी पूंजी का सावधानीपूर्वक प्रबंधन किया जाएगा। यह विनियामक से वादा करता है कि वह विवेकपूर्ण तरीके से काम करेगा। आख़िर में, भारत जैसे देश में बैंकों से समावेशी आर्थिक विकास में सहयोग करने के लिए विकास से जुड़ी व्यापक उम्मीदें भी होती हैं।

अर्थशास्त्र हमें इन वादों को समझने में मदद करता है। यह हमें नैतिक जोखिम, प्रतिकूल चयन, जानकारी में असमानता और प्रणालीगत जोखिम जैसी अवधारणाएं प्रदान करता है।

ये सिर्फ़ किताबी बातें नहीं हैं। ये बैंकिंग में रोज़मर्रा की वास्तविकताएं हैं।

नैतिक खतरा तब होता है जब कोई संस्था बहुत ज़्यादा जोखिम उठाती है क्योंकि उसे लगता है कि इसके परिणाम कोई और भुगतेगा। प्रतिकूल चयन तब होता है जब ऋणदाता अच्छे और बुरे जोखिमों के बीच पूरी तरह अंतर करने में असमर्थ होता है और कमज़ोर आस्ति गुणवत्ता वाले लोगों को ऋण दे बैठता है। सूचना विषमता तब आती है जब बैंक को उधारकर्ता की वास्तविक वित्तीय स्थिति का पता नहीं चल पाता। प्रणालीगत जोखिम तब पैदा हो सकती है जब एक संस्था की विफलता से कई अन्य संस्थाओं में जनता का विश्वास डगमगा जाए।

कक्षा हमें इन वास्तविकताओं को समझने की भाषा देती है। अभ्यास हमें सिखाता है कि असल ज़िंदगी में ये कैसे दिखते हैं। वित्तीय प्रणाली सिर्फ़ चर से नहीं बनी है। यह लोगों, संस्थाओं, प्रोत्साहनों, आदतों, संस्कृतियों, याद, भय और कभी-कभी लालच से बनती है। इसीलिए कक्षा, भले ही कितनी भी मूल्यवान क्यों न हो, अनुभव के बिना अधूरी है।

काउंटर

अब मैं दूसरी शिक्षा पर आता हूँ, वह है काउंटर।

मेरी पीढ़ी के कई बैंकरों के लिए, बैंकिंग की शुरुआत एक शाखा से हुई। काउंटर पर ग्राहक, अलग-अलग रंगों के वाउचर, बहीखाता, नकदी बुक, कागजी फाइलों में ऋण आवेदन, साइट विज़िट और क्रेडिट प्रस्ताव, जिनकी जाँच कक्षा के अभ्यास की तरह नहीं, बल्कि वास्तविक व्यवहार में की जानी थी। यह वह दौर भी था जब बैंकिंग बदल रही थी। डॉ. रंगराजन की समितियों[1] की सिफ़ारिशों ने बैंकों में कंप्यूटरीकरण के शुरुआती दौर को लाने में मदद की और एएलपीएम[2] उस परिवर्तन के दृश्यमान प्रतीकों में से एक बन गया।

[1] बैंकिंग उद्योग में मशीनीकरण पर समिति (अध्यक्ष: डॉ. सी. रंगराजन, 1984), बैंकों में कंप्यूटरीकरण पर समिति (अध्यक्ष: डॉ. सी. रंगराजन, 1988)।

[2] 1980 के दशक के दौरान भारतीय बैंकों में बहीखाता रखरखाव और शाखा-स्तरीय बैंकिंग संचालन को स्वचालित करने के लिए पेश किए गए एएलपीएम, या एडवांस्ड लेजर पोस्टिंग मशीन एकल-उपयोगकर्ता कंप्यूटर प्रणाली थे।

लेकिन आज मेरा विषय कंप्यूटरीकरण नहीं है। यह किसी ज़्यादा बुनियादी और शायद ज़्यादा लंबे समय तक चलने वाली चीज़ के बारे में है। बैंकिंग में पहला सबक जो कोई सीखता है, वह यह है कि यह सिर्फ़ पैसा, लेखांकन या प्रक्रियाओं के बारे में नहीं है। यह सही फ़ैसला लेने के बारे में है।

क्रेडिट भविष्य के बारे में एक निर्णय है। क्या यह ऋण उधारकर्ता चुकाएगा? क्या यह व्यवसाय उतना नकदी प्रवाह उत्पन्न करेगा जितना उसने अनुमान लगाया है? क्या संपार्श्विक का मूल्य वही है जितना बताया गया है? क्या प्रमोटर हकीकत को देख रहा है, उम्मीद से ज़्यादा सोच रहा है, या बहुत ज़्यादा विस्तार करने की कोशिश कर रहा है?

इन सवालों का पक्का जवाब नहीं दिया जा सकता, क्योंकि ऋण का संबंध भविष्य से होता है और जानकारी लगातार बदलती रहती है। जोखिम अक्सर सूक्ष्म तरीकों से सामने आते हैं: जैसे उधारकर्ता अपने खाते कैसे प्रस्तुत करता है, प्रोजेक्ट रिपोर्ट के पीछे क्या सोच है, या रिलेशनशिप मैनेजर का उत्साह कैसा है। इनके लिए विश्लेषण की ज़रूरत होती है, लेकिन साथ ही लोगों, बाज़ारों और संस्थानों की समझ और अंतर्ज्ञान की भी ज़रूरत होती है।

काफ़ी सारे ऋण प्रस्ताव, उधारकर्ता के साथ बैठक और क्रेडिट समिति की चर्चाओं को देखने के बाद, कुछ संकेत समझ में आने लगते हैं। कोई व्यवसाय जो कागज़ पर तो लाभदायक है लेकिन उसमें हमेशा नकदी की कमी रहती है; उधारकर्ता जो हर देरी को अस्थायी बताता है; क्रेडिट प्रस्ताव जो नकद प्रवाह की तुलना में संपार्श्विक पर अधिक निर्भर करता है, एक ऋण बुक जो बैंक की निगरानी क्षमता से तेज़ी से बढ़ती है, ये सभी बातें कुछ न कुछ बताती हैं। इनमें से कोई भी संकेत अपने आप में सबूत नहीं है। लेकिन हर संकेत रुकने, बेहतर सवाल पूछने और गहराई से जाँच करने का इशारा देता है।

काउंटर आपको प्रस्तुति और वास्तविकता के बीच अंतर सिखाता है। लेखापरीक्षित तुलन पत्र और सूचना ज्ञापन उपयोगी हैं, लेकिन वे ही पूरा व्यवसाय नहीं हैं। व्यवसाय कारखाने में, दुकान के फर्श पर, बाजार में, आपूर्ति श्रृंखला में, प्रबंधन की गुणवत्ता में और लिए गए निर्णयों में होता है। इसलिए बैंकर का काम शक करना नहीं है, बल्कि जिज्ञासु होना है।

यहीं से कोई व्यक्ति अर्थशास्त्र और बैंकिंग के विज्ञान के साथ-साथ उसकी कला को भी समझने लगता है। संख्या, अनुपात और मॉडल ज़रूरी हैं। वे अनुशासन लाते हैं, तुलना की अनुमति देते हैं और हमें सिर्फ़ अंतर्ज्ञान पर निर्भर रहने से बचाते हैं। लेकिन वे खुद अपनी व्याख्या नहीं करते। एक सटीक विज्ञान के विपरीत, बैंकिंग का वास्ता लोगों, फ़र्मों, संस्थानों और अनिश्चितता से होता है। वर्तमान अनुपात हमें चलनिधि के बारे में कुछ बता सकता है, लेकिन उधारकर्ता के तनाव प्रबंधन की क्षमता के बारे में सब कुछ नहीं बता सकता। ऋण-इक्विटी अनुपात हमें उत्तोलन के बारे में कुछ बता सकता है, लेकिन प्रबंधन की गुणवत्ता के बारे में सब कुछ नहीं। एक पुनर्भुगतान ट्रैक रिकॉर्ड हमें पिछले व्यवहार के बारे में कुछ बता सकता है, लेकिन भविष्य में मुश्किल हालात का सामना करने की क्षमता के बारे में हमेशा पर्याप्त जानकारी नहीं देता।

यह अर्थशास्त्र के छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण सबक है। संस्थाओं और कंपनियों को सिर्फ़ रिपोर्ट किए गए आंकड़ों से नहीं समझा जा सकता। आंकड़े एक कहानी बताते हैं, लेकिन यह पूछना सीखना चाहिए कि उनके पीछे क्या है: क्या मुनाफ़े को नकदी प्रवाह का सहारा है और क्या विकास क्षमता द्वारा समर्पित है, क्या जोखिम को समझा गया है या वह सबके सामने छिपा हुआ है, और क्या अनुशासन एक असल अभ्यास है या सिर्फ़ एक औपचारिक संरचना है।

काउंटर वित्त के मानवीय पहलू को भी सिखाता है। हर ऋण खाते के पीछे सिर्फ़ एक उधारकर्ता ही नहीं, बल्कि एक कहानी भी होती है। कभी-कभी यह असली व्यवसाय के मुश्किलों की कहानी होती है जैसे एक अच्छी कंपनी जो अपने नियंत्रण से बाहर के झटके से प्रभावित हुई हो। कभी-कभी यह गलत फ़ैसलों की कहानी होती है जैसे बहुत तेज़ी से विस्तार करना, आसानी से कर्ज़ लेना, या अच्छे समय में जोखिम को कम आंकना। बेशक, कभी-कभी यह जानबूझकर की गई कदाचार की कहानी भी होती है। एक बैंकर को इन स्थितियों के बीच अंतर करना सीखना चाहिए, इसलिए नहीं कि कर्ज़ चुकाने का अनुशासन कम ज़रूरी है, बल्कि इसलिए कि कारण को समझने से बेहतर तरीके से प्रतिक्रिया देने में मदद मिलेगी।

काउंटर की यह शिक्षा बहुत अमूल्य है। यह बैंकर को अनुभव, समझ और जोखिम का एहसास देती है। लेकिन एक बैंकर आमतौर पर जोखिम को अपनी संस्था के नज़रिए से देखता है। पर्यवेक्षक को उसी संस्था को प्रणाली के नज़रिए से देखना

चाहिए। नज़रिए में यह बदलाव हमें तीसरी शिक्षा तक ले जाता है, वह है पर्यवेक्षण और जनहित की शिक्षा।

पर्यवेक्षक का दृष्टिकोण

जब कोई पर्यवेक्षण की ओर बढ़ता है, तो दृष्टिकोण बदल जाता है। एक बैंकर स्वाभाविक रूप से विकास, लाभप्रदता, ग्राहक संबंधों और प्रतिस्पर्धा स्थिति के बारे में सोचता है। एक पर्यवेक्षक सुरक्षा, सुदृढ़ता, अनुशासन और व्यापक जनहित के बारे में सोचता है।

इसका मतलब यह नहीं है कि पर्यवेक्षक बैंक चलाने की मुश्किलों के प्रति उदासीन है। इसके विपरीत, अच्छे पर्यवेक्षण के लिए उन मुश्किलों को समझना ज़रूरी है। बैंकिंग में अनिश्चितता होती है। इसमें जोखिम उठाना, रिश्तों का प्रबंधन करना, विकसित जानकारी के साथ निर्णय लेना और प्रतिस्पर्धा का सामना करना शामिल है। लेकिन पर्यवेक्षक की ज़िम्मेदारी अलग होती है। पर्यवेक्षक को न सिर्फ़ यह पूछना चाहिए कि क्या बैंक सफल है, बल्कि यह भी कि क्या वह सुरक्षित और स्वस्थ है।

यह फ़र्क महत्वपूर्ण है। कोई बैंक कुछ समय के लिए सफल दिख सकता है क्योंकि वह तेज़ी से बढ़ रहा है, बाजार शेयर हासिल कर रहा है और अच्छा मुनाफ़ा दिखा रहा है। पर्यवेक्षक का काम सतह के नीचे देखना और संस्था के बारे में एक स्वतंत्र दृष्टिकोण बनाना है।

सच तो यह है कि पर्यवेक्षक का काम समझना हमेशा आसान नहीं होता। पर्यवेक्षण बैंकों पर कुछ शर्तें लागू करता है। यह जानकारी मांगता है, प्रणाली की समीक्षा करता है, कामकाज के तरीकों पर सवाल उठाता है और कभी-कभी ऐसे बदलाव की आवश्यकता होती है जो बोझिल लग सकते हैं।

पर्यवेक्षण की लागत अक्सर साफ़ दिखाई देती है। यह अनुपालन समूहों के आकार, रिपोर्ट, लेखापरीक्षा, प्रौद्योगिकी प्रणालियों और प्रबंधन अवधि के आकार में दिखाई देते हैं। हालाँकि, इसके लाभ को मापना बहुत मुश्किल है। जो संकट आया ही नहीं, उसे कैसे मापा जाए? बैंक से अचानक बड़ी मात्रा में पैसे निकाले जाने की स्थिति को टालने, जमाकर्ता की सुरक्षा करने, धोखाधड़ी रोकने या किसी नियंत्रण अंतर को एक प्रणालीगत बड़ी समस्या बनने से पहले ठीक करने संबंधी मूल्य की गणना कैसे की जाए?

अच्छे पर्यवेक्षण का यही विरोधाभास है। जब यह ठीक से काम करता है, तो अक्सर इस पर कम ध्यान दिया जाता है, ज़्यादा नहीं। इसका मकसद सुर्खियाँ बटोरना नहीं है। इसका मकसद चुपचाप भरोसा बनाए रखना है, ताकि परिवार अपनी बचत बैंकों में रख सकें, कारोबारियों को ऋण मिल सके और वित्तीय प्रणाली अस्थिरता का कारण बने बिना वास्तविक अर्थव्यवस्था को सहारा दे सके।

इसीलिए पर्यवेक्षण को सिर्फ़ औपचारिक अनुपालन से परे देखना चाहिए। अनुपालन यह देखता है कि नियम का पालन हुआ है या नहीं। पर्यवेक्षण यह देखता है कि क्या अंतर्निहित जोखिम को समझा गया है और उसका समाधान किया गया है।

एक बैंक के पास आवश्यक समितियां, नीतियां और रिपोर्ट हो सकती हैं, लेकिन असली सवाल यह है कि क्या ये तंत्र प्रभावी हैं। क्या जोखिमों को समय पर पहचाना जा रहा है? क्या ऋणों की सही निगरानी की जा रही है? क्या शासन संरचनाएं कठिन प्रश्न पूछ रही हैं? क्या विकास ध्वनि हामीदारी द्वारा समर्थित है? ये सवाल इसलिए मायने नहीं रखते हैं क्योंकि पर्यवेक्षक उन्हें पूछने का आनंद लेते हैं, बल्कि इसलिए कि एक संस्था में अनियंत्रित कमजोरी कई अन्य लोगों पर लागत लगा सकती है।

इस नज़रिए से देखें तो बैंकिंग पर पर्यवेक्षण कोई बाधा नहीं, बल्कि उस नीव का हिस्सा है जिससे बैंकिंग को लोगों का भरोसा मिलता है।

कम पर्यवेक्षण वाली प्रणाली कुछ समय के लिए तो कुशल लग सकती है, क्योंकि इसमें लागत कम होती है और विकास तेज़ी से हो सकता है। लेकिन अगर वह विकास कमज़ोर अनुशासन, खराब क्रेडिट मानकों या छिपे हुए जोखिमों पर टिका हो, तो अंतिम लागत न केवल शेयरधारकों या प्रबंधन द्वारा वहन की जाती है, बल्कि जमाकर्ताओं, उधारकर्ताओं, करदाताओं और व्यापक अर्थव्यवस्था द्वारा वहन की जाती है। पर्यवेक्षण का सही मूल्य ऐसे परिणामों की संभावना और गंभीरता को कम करने में निहित है।

अर्थशास्त्र के छात्रों के लिए, यह सार्वजनिक नीति में भी एक महत्वपूर्ण सबक है। कुछ सार्वजनिक वस्तुओं का मूल्य तय करना मुश्किल है क्योंकि उनका सबसे बड़ा मूल्य रोकथाम में निहित है। वित्तीय स्थिरता ऐसी ही एक सार्वजनिक वस्तु है। मौजूद होने पर इसे हल्के में लिया जाता है, लेकिन इसकी अनुपस्थिति बहुत ज़्यादा उथल-पुथल मचा देती है। बैंकिंग पर्यवेक्षण उन संस्थागत

तरीकों में से एक है जिसके माध्यम से उस सार्वजनिक वस्तुओं की रक्षा की जाती है।

सबको एक साथ लाना

आइए, अब इन सभी बातों को एक साथ जोड़ते हैं। कक्षा, काउंटर और पर्यवेक्षी दृष्टिकोण अलग-अलग दुनिया के लग सकते हैं। लेकिन असल में, वे गहराई से जुड़े हुए हैं। कक्षा हमें स्पष्ट रूप से सोचने में मदद करती है। काउंटर हमें ध्यान से देखने का मौका देता है। पर्यवेक्षण हमें निकटतम संस्थान से परे व्यापक प्रणाली को देखने में सक्षम बनाता है।

इस कमरे में मौजूद छात्रों के लिए, मैं तीन आसान बातें कहना चाहूँगा।

पहली बात, अपनी औपचारिक शिक्षा को गंभीरता से लें। अवधारणाएँ मायने रखती हैं। फ्रेमवर्क मायने रखते हैं। प्रोत्साहन, ट्रेड-ऑफ़ और आप जिस किसी भी क्षेत्र में जाएँगे, अनपेक्षित परिणामों के बारे में सोचने की क्षमता आपको काम आएगी।

दूसरी बात, केवल अवधारणाओं तक ही सीमित न रहें। यह भी देखें कि संस्थाएँ असल में कैसे काम करती हैं। यह समझें कि निर्णय कैसे लिए जाते हैं, जोखिम कैसे उठाए जाते हैं, संगठनों के अंदर रिवॉर्ड स्ट्रक्चर कैसे काम करते हैं, और नीति को व्यवहार में कैसे लागू किया जाता है।

तीसरी बात, याद रखें कि वित्त का असर तुलन पत्र से कहीं ज़्यादा होता है। ऋण से जुड़े निर्णय व्यवसाय, लोगों की आजीविका और विकास पर असर डालते हैं। किसी एक वित्तीय संस्थान में कमज़ोर अनुशासन का असर उन लोगों पर भी पड़ सकता है जिनका उस कमज़ोरी को पैदा करने में कोई हाथ नहीं था। इसलिए, मज़बूत वित्त न केवल लाभप्रदता का मामला है, बल्कि ज़िम्मेदारी का भी मामला है।

आप जिस दुनिया में कदम रखने जा रहे हैं, वह बैंकरों और प्रशासकों की पिछली पीढ़ियों की दुनिया से बहुत अलग है। बैंकिंग ज़्यादा डिजिटल, ज़्यादा डेटा-संचालित और ज़्यादा परस्पर जुड़ी हुई होती जा रही है। क्रेडिट अब प्लेटफ़ॉर्म के ज़रिए भी दिया जा सकता है। भुगतान तुरंत हो जाते हैं। एल्गोरिदम ऋण देने के निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं। वित्तीय मध्यस्थता में गैर-बैंक संस्थाओं की भूमिका बढ़ती जा रही है।

ये परिवर्तन अपार संभावनाएं लाते हैं। इनसे पहुँच बढ़ सकती है, लागत कम हो सकती है और काम करने की क्षमता बेहतर हो सकती है। लेकिन इनसे नए सवाल भी खड़े होते हैं: क्या ग्राहक के साथ उचित व्यवहार किया जा रहा है? क्या मॉडल समझने लायक है? क्या जवाबदेही साफ़ है? क्या जोखिमों की पहचान समय रहते की जा रही है?

इन सवालों का जवाब सिर्फ़ तकनीक से नहीं मिल सकता। इनके लिए सही समझ और निर्णय लेने की क्षमता की ज़रूरत होती है। इनके लिए संस्थागत अनुशासन की ज़रूरत होती है। इनके लिए इस बात को विनम्रता से स्वीकार करने की ज़रूरत होती है कि हम क्या नहीं जानते। और सबसे बढ़कर, इनके लिए जन-सेवा की भावना की ज़रूरत होती है।

मेरे विचार से, श्री जी. रामचंद्रन के जीवन और कार्य की अहमियत भी यही है। वे उस पीढ़ी से थे जिसे संस्थाएँ बनाने का काम सौंपा गया था, न कि सिर्फ़ उन्हें चलाने का। उन्होंने ऐसे समय में काम किया जब आर्थिक नीति राष्ट्र निर्माण के काम से अलग नहीं थी। उस समय उपलब्ध साधन अलग थे, चुनौतियाँ अलग थीं, और वित्तीय प्रणाली आज की तुलना में बहुत कम जटिल थी। लेकिन मुख्य सवाल वही है: हम यह कैसे सुनिश्चित करें कि वित्त अर्थव्यवस्था और लोगों की ज़रूरतों को पूर करता है?

हर पीढ़ी को इस सवाल का जवाब अपने तरीके से देना होता है। श्री रामचंद्रन की पीढ़ी ने संस्थाएँ बनाकर, लोक प्रशासन और अहम नीतिगत निर्णयों के ज़रिए इसका जवाब दिया। आज की पीढ़ी को इसका जवाब सही विनियमन, ज़िम्मेदार नवोन्मेष, बेहतर अनुशासन और एक ऐसी वित्तीय प्रणाली के ज़रिए देना होगा जो अस्थिरता का कारण बने बिना विकास में मदद करे। आपकी पीढ़ी को इसका जवाब ऐसे तरीकों से देना होगा जो शायद अभी हमें पूरी तरह दिखाई न दे रहे हों, लेकिन जिनके लिए ज्ञान, सही समझ और जन-हित के उद्देश्य के समान संयोजन की ज़रूरत होगी।

भविष्य की वित्तीय प्रणाली के लिए तकनीकी कौशल की ज़रूरत होगी, लेकिन इसके लिए कुछ अधिक की आवश्यकता होगी। इसके लिए ऐसे लोगों की आवश्यकता होगी जो ज्ञान को निर्णय के साथ और महत्वाकांक्षा को सार्वजनिक उद्देश्य के साथ जोड़ सकें।

इस संदर्भ में, ज्ञान के अनुप्रयोग के बारे में तिरुवल्लुवर की एक सटीक कहावत याद आती है:

கற்க கசடறக் கற்பவை கற்றபின்
நிற்க அதற்குத் தக. (391)

"जो सीखना चाहिए उसे अच्छी तरह सीखें, और आपका आचरण उस सीख के अनुरूप हो।"

इसी भावना के साथ हम आज श्री जी. रामचंद्रन को याद कर रहे हैं। उनका करियर हमें याद दिलाता है कि जन-सेवा को सिर्फ़ हासिल की गई शिक्षा या संभाले गए पदों से ही नहीं मापा जाता, बल्कि उन संस्थाओं से भी मापा जाता है जिन्हें मज़बूत करने में किसी ने मदद की हो, और उस बड़े मकसद से भी जिसे पूरा करने के लिए काम किया हो।

मैं मद्रास स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स, सदर्न इंडिया चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री और श्री जी. रामचंद्रन के परिवार का आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे यह स्मारक व्याख्यान देने का सम्मान दिया। धन्यवाद। जय हिंद।